कारक

Ans → कारक की परिभाषा

APPOINTMENTS :

PHONE/E-MAIL :

NOTES :

Scanned with OKEN Scanner

आचार्य हेमचन्द्र कृत प्राकृत व्याकरण के अनुसार क्रिया की परिभाषा इस प्रकार है:—

क्रिया हेतु कारकम् अर्थात जो क्रिया की उत्पत्ति में सहाय हो, उसे कारक कहते हैं। जैसे - रामो खेलइ। इसमें खेलइ क्रिया में राम सहायक है, इसलिए रामो यहाँ कारक है।

कारक के भेद :—

प्राकृत - व्याकरण के अनुसार कारक के निम्न 6 भेद हैं।

① कर्ता कारक ② कर्म कारक ③ करण कारक ④ सम्प्रदान कारक ⑤ आपादान कारक ⑥ अधिकरण कारक

1. **कर्ता कारक:** जो क्रिया का प्रधान सम्प्रदाय कर्ता हो, उसे कर्ता कारक कहते हैं। जैसे -> रामो गच्छई। यहाँ गच्छई, क्रिया का प्रधान कर्ता रामो है। अतः रामो कर्ता कारक है। इसमें प्रथमा विभक्ति के वचन में ओ और बहुवचन में आ का प्रयोग होता है।

Scanned with OKEN Scanner

② कर्म कारक :— क्रिया के व्यापार का फल सूचित करने वाली संज्ञा के रूप को कर्म-कारक कहते है। जैसे :— रामो पयेण ओयणं भुंजइ (राम दूध से चावल खाता है) यहाँ पर खाना क्रिया के व्यापार का फल ओयणं इसमे द्वितीय विभक्ति के एक वचन में अमू और बहुवचन में आ विभक्ति का प्रयोग होता है।

③ करण कारक :— जो क्रिया की सिद्धि मे कर्ता के लिए सबसे अधिक सहायक हो, उसे करण कारक कहते है। जैसे कण्हेणं वाणेण हओ कंसो। (कृष्ण ने वाण के द्वारा कंस को मारा।

प्रस्तुत उदाहरण मे कर्ता के लिए, कृष्ण ने कंस को मारा। इसमें कृष्ण ने कंस को मारने में सहायता वाण से ली। यद्यपि कंसवध में कृष्ण के धनुष दोनो सहायक है। किन्तु वे प्रमुख नही है, वाण है इसलिए वाण में तृतीया विभक्ति के एक वचन प्रयोग हुआ है। तृतीया विभक्ति के एक वचन में और बहुवचन में एहि का प्रयोग होता है।

NOTES :

APPOINTMENTS :

PHONE/E-MAIL :

(4) सम्प्रदान कारण : किसी के लिए क्रिया की जाए या वस्तु के दान देने के कारण कर्ता जिसे संतुष्ट करता है, उसे सम्प्रदान कारक कहते है। जैसे - सो विप्राय गाय ददाति (वह ब्राह्मण के लिए गाय दान में देता है)। यहाँ पर कर्ता को स्वरूप ब्राह्मण का दान देने के कारण संतुष्ट होने से, विभक्ति मे चतुर्थी एक वचन 'स्स' का प्रयोग हुआ है। इसके चतुर्थी विभक्ति के एक वचन मे 'स्स' और बहुवचन में 'आण' का प्रयोग होता है।

(5) आपादान कारक :-

जिसमें अलगाव (बिछड़ने) का भाव प्रकट हो उसे आपादान कारक कहते है। जैसे- धावतो, अस्सतो पडइ। (दौड़ते हुए घोड़े से गिरता है) यहाँ पर घोड़सवार का घोड़े से गिरने के कारण अलगाव हुआ है। इसलिए अश्व से पंचमी विभक्ति के एक वचन तो का प्रयोग किया गया है। इसमे पंचमी विभक्ति के एक वचन में तो और बहुवचन में 'आहिंतो' का प्रयोग होता है।

APPOINTMENTS : PHONE/E-MAIL :

MARCH						
WK	S	M	T	W	T	
10	1	2	3	4	5	
11	8	9	10	11	12	
12	15	16	17	18	19	
13	22	23	24	25	26	
14	29	30	31			

(6) अधिकरण कारक :-

जो किसी भी क्रिया का आधार हो उसे अधिकरण कहते हैं।

(क) मोक्षे सुखं अस्ति। (मोक्ष में सुख है)
(ख) तिलेषु तैल संति (तिलों में तेल है)

यहाँ पर सुख का आधार मोक्ष और तिल का आधार तिल होने के कारण तिल में सप्तमी विभक्ति के एक वचन में ए, मि और बहुवचन में सु का प्रयोग होता है।